भा वा अ शि प - वन उत्पादकता संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

विश्व पर्यावरण दिवस 2023 का मेगा इवेंट

"बाँस हस्तशिल्प कला प्रदर्शनी" एवं "Beat Plastic Pollution" पर संगोष्ठी

स्थल : भावाअशिप - वन उत्पादकता संस्थान, रांची

5.06.2023

भावाअशिप – वन उत्पादकता संस्थान, राँची के निदेशक डॉ. योगेश्वर मिश्रा के नेतृत्व एवं उप वन संरक्षक श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की के मार्गदर्शन में विश्व पर्यावरण दिवस 2023 के मेगा इवेंट के तहत दिनांक 05/06/2023 को संस्थान के सभागार में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अतिथि वक्ता के रूप में श्री बछव प्रवीण भाऊराव, संयुक्त निदेशक एवं प्रमुख, कौशल एवं तकनीकी सहायता केंद्र (सीएसटीएस), केन्द्रीय पेट्रोरसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सिपेट), राँची ने प्लाटिक वेस्ट मैनेजमेंट एवं अर्बन खेती के श्री प्रकाश कुमार ने आर्गेनिक वेस्ट मैनेजमेंट एवं अर्बन खेती फार्मिंग पर अपनी अपनी प्रस्तुति के माध्यम से संस्थान के लगभग 80 अधिकारीयों, कर्मचारियों एवं शोधकर्मियों को लाभान्वित किया।

उप वन संरक्षक श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की ने कार्यक्रम की रुपरेखा रखते हुए विश्व पर्यावरण दिवस की आवश्यकता एवं वर्त्तमान चुनौतियों के विषय में विस्तार से बताया। उन्होने बताया कि विश्व में 400 Million मीट्रिक टन उत्पादन है जिसका 50% सिर्फ एकल उपयोग के प्लास्टिक है जो घातक साबित होते जा रहां है। उन्होंने खाद्य पदार्थो, हवा, पानी में माइक्रो प्लास्टिक की उपस्थिति का आंकड़ा बताते हुए बायोमेगनीफिकेसन के विषय में भी विस्तार से समझाया तथा हमारे खाद्य सिस्टम में इनसे उत्पन्न बहुत सारी विमारियों की चर्चा की।

संस्थान के निदेशक डॉ योगेश्वर मिश्रा ने विश्व पर्यावरण दिवस की शुभकामना देते हुए हर्ष व्यक्त किया कि संस्थान ने 20 दिनों के भीतर मिशन लाइफ के लिए निर्धारित 300 गतिविधियों का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। उन्होंने कहा कि एकल उपयोग के प्लास्टिक प्रदूषण को हराने के लिए भी बिभिन्न गतिविधियाँ की जा रही है। उन्होंने पालिसी डेवलप करने की बात कहते हुए ई-बेस्ट को भी बड़ा मुद्दा बताया।उन्होंने कहा कि देश में लगभग 53 लाख metric ton ई-कचड़ा प्रतिबर्ष निकलता है जिसमे 17% ही रिसायकेबल है। लिथियम को प्रदूषण का बड़ा कारण बताया। उन्होंने कार्बन क्रेडिट की चर्चा करते हुए पर्यावरण संरक्षण एवं वनवर्धन के लिए कृषि वानिकी को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बताया कि झारखण्ड का वन क्षेत्र तो बढ़ा है लेकिन सघन वन क्षेत्र में ह्रास हुआ है। उन्होंने संस्थान में चल रहे All India Coordinated research Projects (AICRP) की भी चर्चा की एवं संस्थान द्वारा चलाए जा रहे परियोजना से आने वाले दिनों में परिवर्तन की उम्मीद जताई।

कार्यशालाकी झलकियाँ

विश्व पर्यावरण दिवस 2023 का मेगा इवेंट

दिनांक 05.06.2023

"बाँस हस्तशिल्प कला प्रदर्शनी" एवं "Beat Plastic Pollution" पर संगोष्ठी

अर्बन खेती के श्री प्रकाश कुमार ने किचन बेस्ड कचड़ा निपटान में कम्पोस्टिंग को महत्वपूर्ण बताते हुए गीला कचड़ा एवं सुखा कचड़ा को पृथक करने की बात कही। शहर की ओर पलायन के कारण खेती को नुकशान हुआ है। रसोईघर के गीले कचड़े को पूर्णतः जैविक खाद बनाने के उपायों के विषय मेंविस्तृत से समझाते हुए मात्र 600 रूपये में उनकी संस्था द्वारा निर्मित तकनीकी उपलब्ध कराने की बात कही, लैंडफिल को घातक बताते हुए उन्होंने बताया कि गीले कचड़े के कारण मीथेन गैस का उत्सर्जन होता है जो ओजोन परत के लिए काफी नुकसानदायक तथा ग्लोबल वार्मिंग का प्रमुख कारण बताया। उन्होंने मिशन लाइफ के उद्धेश्यों की भी चर्चा की थी।

सीएसटीएस, सिपेट, राँची के संयुक्त निदेशक प्रवीण भाऊराव ने प्लास्टिक कचड़ा रिसाइक्लिंग एवं प्रबंधन को विस्तार से बताया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में बताया कि प्लास्टिक के स्ट्रॉ का उपयोग होता था जिसके जगह अब अनेक जैविक सामान उपयोग में आ रहे है। उन्होंने प्लास्टिक को समस्या नही बताते हुए उसके दुरुपयोग एवं गैरजिम्मेदाराना प्रबंधन को प्रदूषण का समस्या बताया।उन्होंने प्लास्टिक के विभिन्न प्रकारों की चर्चा की एवं बताया की सबसे ज्यादा single use plastic का कचड़ा पैकेजिंग से आता है। प्लास्टिक को 7 अलग अलग ग्रेड में बांटकर छंटनी करने से प्रदूषण की समस्या बहुत हद तक ख़त्म हो सकती है। उन्होंने इंदौर, बेंगलुरु एवं पुणे का उदहारण दिया जो सिर्फ कचड़ा प्रबंधन के कारण स्वच्छ शहरो में गिने जाते हैं। उन्होंने संस्थान के सदस्यों द्वारा पूछे गए अनेकों सवालों का विस्तारपूर्वक एवं सहज भाषा में जवाब दिया।

डॉ शरद तिवारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम की सफलता में श्री बी.डी.पण्डित, श्री बसंत कुमार, श्री करम सिंह मुण्डा, श्री मोहित सत्पथी का सराहनीय योगदान रहा।

भा वा अ शि प - वन उत्पादकता संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)